आचार्य वीरनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्ती

जीवन-परिचय : आचार्य वीरनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्ती विशिष्ट दार्शनिक और प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। आप नन्दिसंघ और देशीयगण के आचार्य थे। ये मुनि विबुध गुणनन्दि के प्रशिष्य और अभयनन्दि के शिष्य थे, जो मुनियों के द्वारा वन्दनीय थे। इन्होंने मिथ्यावाद को नष्ट किया था। ये सम्पूर्ण गुणों में समृद्ध थे, मिथ्यावाद और भव्य लोगों के अद्वितीय बन्धु थे। आचार्य वीरनन्दि अनेक गुणों के धारक थे। इन्होंने सम्पूर्ण वाङ्मय का अध्ययन कर लिया था और ये कुतर्कों का नाश करने वाले थे।

वीरनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्ती 11वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के विद्वान हैं। इनके द्वारा रचित ग्रन्थ चन्द्रप्रभचरित विक्रम संवत् 1082 से पूर्व की रचना है।

रचना-परिचय : आपकी एकमात्र कृति चन्द्रप्रभचरित काव्य है।

1. चन्द्रप्रभचरित : इस ग्रन्थ की कथावस्तु का आधार उत्तरपुराण है। इस ग्रन्थ में आचार्य ने भगवान चन्द्रप्रभ के चरित्र का वर्णन किया है। यह ग्रन्थ 18 सर्गों में विभक्त है। जिसकी श्लोक-संख्या 1691 है। यह काव्य विभिन्न अलंकारों से सम्पन्न है। यह रचना अत्यन्त सरस और प्रसाद गुण से भरपूर है।